Media Coverage- MoUs between TFRI, Jabalpur and various Institutes/ Universities of Bundelkhand region

कृषि वानिकी तथा कृषि के अन्य विषयों के शोध एवं प्रसार कार्य पर हुआ अनुबंध

(जनप्रिय संवाददाता)

झाँसी। रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झाँसी और उष्ण कटिबंधीय वन शोध संस्थान जबलपुर के बीच वानिकी, कृषि वानिकी व कृषि की अन्य विषयों के अकादमिक, शोध एवं प्रसार कार्य पर अनुबंध किया गया। इस अवसर पर कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अरविन्द कुमार व टी.एफ.आर.आई जबलपुर के निदेशक डॉ. जी राजेश्वर राव ने अनुबंध को एक आपसी प्रगति के लिये तथा शिक्षण, प्रशिक्षण, वैज्ञानिक समन्वयन के लिए आवश्यक बताया। आज के वैश्विक चुनोतियों के लिये समग्रह पार्ट्नर्शिप द्वारा ही मुकाबला किया जा सकता है। कार्यक्रम में कुलसचिव डॉ. मुकेश श्रीवास्तव, अधिष्ठाता उद्यानिकी एवं वानिकी डॉ. ए.के पांडे, अधिष्ठाता कृषि डॉ. एस.के चतुर्वेदी, निदेशक शिक्षा डॉ. अनिल कुमार, निदेशक शोध डॉ. ए. आर. शर्मा व जबलपुर से आए वैज्ञानिकगण, शिक्षक व छात्र उपस्थित रहे। छात्रों के सम्बोधन में डॉ. राव ने वानिकी और ग्लोबल नए शोध पर टी.एफ. आर.आई द्वारा किये प्रयासों को बताया तथा संस्थान भ्रमण करने को कहा। कुलपति डॉ कुमार ने विश्वविद्यालय की वानिकी व अन्य विषयों के अल्पसमय मे की गई उपलब्धि बताई। डॉ पांडे ने उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय के द्वारा नवीन प्रदर्शन व प्रायोगिक फार्म की चर्चा की तथा उनको अवलोकन करने का निमंत्रण दिया। निदेशक शिक्षा डॉ. अनिल कुमार ने विश्वविद्यालय के बारे मे विस्तृत रिपोर्ट दी व शैक्षणिक गतिविधियों के बारे मे बताया। वानिकी मे टी.एफ.आर.आई के साथ मिलकर आये आयाम जोड़ने की आशा व्यक्त की जिससे पर्यावरण क्षरण के चुनोतियों से निपट जाये व सतत विकास की अवधारणा को पोषित किया जाये। डॉ. प्रभात तिवारी ने संचालन किया तथा आभार डॉ. मनमोहन डोबरियाल ने किया।

बुन्देलखण्ड की जलवायु वानिकी एवं कृषि वानिकी के लिये महत्वपूर्ण : कुलपति

बांदा। शुक्रवार को बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक वि0वि0 बाँदा के अन्तर्गत संचालित वानिकी महाविद्यालय के तत्वाधान में कुलपति सभागार कक्ष में उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर और बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक वि0वि0, बाँदा के बीच में एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये गये है। कृषि विश्वविद्यालय की तरफ से कुलपति प्रो0 नरेन्द्र प्रताप सिंह तथा उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के निदेशक डा0 जी0आर0 राव ने समझौते पर हस्ताक्षर कर द्विपक्षीय दस्तावेज एक दूसरे को सौंपें। यह समझौता बुन्देलखण्ड के जलवायु में वानिकी के महत्व को देखते हुए एक सराहनीय कदम है। कुलपति के कार्यभार ग्रहण करने के पश्चात् यह पहला समझौता किसी राष्ट्रीय संस्थान के साथ हुआ है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 नरेन्द्र प्रताप सिंह ने बताया कि इस समझौते के माध्यम से हम वानिकी महाविद्यालय के अन्तर्गत संचालित विभिन्न विभागों के साथ-साथ अध्ययनरत छात्रों के अध्ययन, शोध कार्य, संगोष्ठी, कार्यशाला, प्रशिक्षण, साझा शोध परियोजनाएं व क्षमतावर्धन कार्यक्रम के क्षेत्र में विभिन्न अवसर प्राप्त होंगें। बुन्देलखण्ड के पर्यावरण को देखते हुए वानिकी महत्व के विभिन्न पेड़-पौधों के विकास एवं व्यवसायिक प्रतिष्ठान विकसित कर कृषकों एवं युवाओं को रोजगार सृजन में आसानी होगी। समझौते के अनुसार यहां के शोधार्थी छात्र शोध हेतु संस्थान में शोध कार्य कर सकते है। उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर के निदेशक डा0 जी0आर0 राव ने इस समझौते को एक महत्वपूर्ण कदम बताया। उन्होंने बताया कि यह विश्वविद्यालय शिक्षा एवं शोध के क्षेत्र में एक अलग पहचान बनायी है, और आने वाले समय में यह दोनों संस्थानें मिलकर वानिकी के क्षेत्र में बुन्देलखण्ड में कृषकोपयोगी तकनीकियां विकसित कर कृषकों की आय में बढ़ोतरी करने का प्रयास करेंगी। वानिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा0 संजीव कुमार ने इस समझौते के लिये महत्वपूर्ण भूमिका निभायी हैं।

डा0 संजीव कुमार ने बताया कि यह समझौता महाविद्यालय के शिक्षा, शोध, व प्रसार गतिविधियों में तेजी लाएगा। शोधार्थी छात्रों के लिये शोध के लिये नये आयाम विकसित होंगे जिसका फायदा इस क्षेत्र के कृषकों को वानिकी के क्षेत्र में नई तकनीकी के रूप में मिलेंगी। उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर के परिस्थितिकी एवं जलवायु परिवर्तन विभाग के विभागाध्यक्ष डा0 अविनाश जैन ने इस समझौतें को क्षेत्र के लिये आवश्यक और जरूरी कदम बताया। समझौता ज्ञापन के दौरान विश्वविद्यालय के निदेशक प्रसार डा0ए0ए0 के0 बाजपेयी, अधिष्ठाता उद्यान, डा0 एस0वी द्विवेदी, अधिष्ठाता कृषि, डा0जी0ए0एस0 पंवार, एवं वित्त नियंत्रक डा0 अजीत सिंह उपस्थिति रहे।

कृषि वानिकी तथा कृषि के अन्य विषयों के शोध एवं प्रसार कार्य पर हुआ अनुबंध

उद्योग हकीकत, झांसी

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झाँसी और उष्ण कटिबंधीय वन शोध संस्थान जबलपुर के बीच वानिकी, कृषि वानिकी व कृषि की अन्य विषयों के अकादमिक, शोध एवं प्रसार कार्य पर अनुबंध किया गया। इस अवसर पर कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अरविन्द कुमार व टी.एफ.आर.आई जबलपुर के निदेशक डॉ. जी राजेश्वर राव ने अनुबंध को एक आपसी प्रगति के लिये तथा शिक्षण, प्रशिक्षण, वैज्ञानिक समन्वयन के लिए आवश्यक बताया। आज के वैश्विक चुनोतियों के लिये समग्रह पार्ट्नर्शिप द्वारा ही मुकाबला किया जा सकता है। कार्यक्रम में कुलसचिव डॉ. मुकेश श्रीवास्तव, अधिष्ठाता उद्यानिकी एवं वानिकी डॉ. ए.के. पांडे, अधिष्ठाता कृषि डॉ. एस.के. चतुर्वेदी, निदेशक शिक्षा डॉ. अनिल कुमार, निदेशक शोध डॉ. ए. आर. शर्मा व जबलपुर से आए वैज्ञानिकगण, शिक्षक व छात्र उपस्थित रहे। छात्रों के सम्बोधन में डॉ. राव ने वानिकी और ग्लोबल नए शोध पर टी.एफ.आर.आई द्वारा किये प्रयासों को बताया तथा संस्थान भ्रमण करने को कहा। कुलपति डॉ कुमार ने विश्वविद्यालय की वानिकी व अन्य विषयों के अल्पसमय मे की गई उपलब्धि बताई। डॉ पांडे ने उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय के द्वारा नवीन प्रदर्शन व प्रायोगिक फार्म की चर्चा की तथा उनको अवलोकन करने का निमंत्रण दिया। निदेशक शिक्षा डॉ. अनिल कुमार ने विश्वविद्यालय के बारे मे विस्तृत रिपोर्ट दी व शैक्षणिक गतिविधियों के बारे मे बताया। वानिकी मे टी.एफ.आर.आई के साथ मिलकर आये आयाम जोड़ने की आशा व्यक्त की जिससे पर्यावरण क्षरण के चुनोतियों से निपट जाये व सतत विकास की अवधारणा को पोषित किया जाये। डॉ. प्रभात तिवारी ने संचालन किया तथा आभार डॉ. मनमोहन डोबरियाल ने किया।

स्वदेश

झांसी, मंगलवार, 14 दिसम्बर 2021 2

कृषि वानिकी तथा कृषि के अन्य विषयों के शोध एवं प्रसार कार्य पर हुआ अनुबंध

झाँसी। रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झाँसी और उष्ण कटिबंधीय वन शोध संस्थान जबलपुर के बीच वानिकी, कृषि वानिकी व कृषि की अन्य विषयों के अकादमिक, शोध एवं प्रसार कार्य पर अनुबंध किया गया। इस अवसर पर कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अरविन्द कुमार व टी.एफ.आर.आई जबलपुर के निदेशक डॉ. जी राजेश्वर राव ने अनुबंध को एक आपसी प्रगति के लिये तथा शिक्षण, प्रशिक्षण, वैज्ञानिक समन्वयन के लिए आवश्यक बताया। आज के वैश्विक चुनोतियों के लिये समग्रह पार्ट्नर्शिप द्वारा ही मुकाबला किया जा सकता है। कार्यक्रम में कुलसचिव डॉ. मुकेश श्रीवास्तव, अधिष्ठाता उद्यानिकी एवं वानिकी डॉ. ए.के. पांडे, अधिष्ठाता कृषि डॉ. एस.के. चतुर्वेदी, निदेशक शिक्षा डॉ. अनिल कुमार ने विश्वविद्यालय के बारे मे विस्तृत रिपोर्ट दी व शैक्षणिक गतिविधियों के बारे मे बताया। वानिकी मे टी.एफ.आर.आई के साथ मिलकर आये आयाम जोड़ने की आशा व्यक्त की जिससे पर्यावरण क्षरण के चुनोतियों से निपट जाये व सतत विकास की अवधारणा को पोषित किया जाये। डॉ. प्रभात तिवारी ने संचालन किया तथा आभार डॉ. शर्मा व जबलपुर से आए वैज्ञानिकगण, शिक्षक व छात्र उपस्थित रहे। छात्रों के सम्बोधन में डॉ. राव ने वानिकी और ग्लोबल नए शोध पर टी.एफ.आर.आई द्वारा किये प्रयासों को बताया तथा संस्थान भ्रमण करने को कहा। कुलपति डॉ कुमार ने विश्वविद्यालय की वानिकी व अन्य विषयों के अल्पसमय मे की गई उपलब्धि बताई। डॉ पांडे ने उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय के द्वारा नवीन प्रदर्शन व प्रायोगिक फार्म की चर्चा की तथा उनको अवलोकन करने का निमंत्रण दिया। निदेशक शिक्षा डॉ. अनिल कुमार ने विश्वविद्यालय के बारे मे विस्तृत रिपोर्ट दी व शैक्षणिक गतिविधियों के बारे मे बताया। वानिकी मे टी.एफ.आर.आई के साथ मिलकर आये आयाम जोड़ने की आशा व्यक्त की जिससे पर्यावरण क्षरण के चुनोतियों से निपट जाये व सतत विकास की अवधारणा को पोषित किया जाये। डॉ. प्रभात तिवारी ने संचालन किया तथा आभार डॉ.

बुंदेलखंड की जलवायु वानिकी एवं कृषि वानिकी के लिये महत्वपूर्ण: कुलपति

बांदा। कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के अर्न्तगत संचालित वानिकी महाविद्यालय के तत्वाधान में कुलपति सभागार कक्ष में उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर और बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक वि0वि0, बाँदा के बीच में एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये गये है। कृषि विश्वविद्यालय की तरफ से कुलपति प्रो0 नरेन्द्र प्रताप सिंह तथा उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के निदेशक डा0 जीआर राव ने समझौते पर हस्ताक्षर कर द्विपक्षीय दस्तावेज एक दूसरे को सौपें। यह समझौता बुन्देलखण्ड के जलवायु में वानिकी के महत्व को देखते हुए एक सराहनीय कदम है। कुलपति के कार्यभार ग्रहण करने के पश्चात यह पहला समझौता किसी राष्ट्रीय संस्थान के साथ हुआ है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरेन्द्र प्रताप सिंह ने बताया कि इस समझौते के माध्यम से हम वानिकी महाविद्यालय के अर्न्तगत संचालित विभिन्न विभागों

के साथ-साथ अध्ययनरत छात्रों के अध्ययन, शोध कार्य, संगोष्ठी, कार्यशाला, प्रशिक्षण, साझा शोध परियोजनाएं व क्षमतावर्धन कार्यक्रम के क्षेत्र में विभिन्न अवसर प्राप्त होंगें। बुन्देलखण्ड के पर्यावरण को देखते हुए वानिकी महत्व के विभिन्न पेड़-पौधों के विकास एवं व्यवसायिक प्रतिष्ठान विकसित कर कृषकों एवं युवाओं को रोजगार सृजन में आसानी होगी। समझौते के अनुसार यहां के शोधार्थी छात्र शोध हेतु संस्थान में शोध कार्य कर सकते है। उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर के निदेशक डा0 जी0 आर0 राव ने इस समझौते को एक महत्वपूर्ण कदम बताया। उन्होंने बताया कि यह विश्वविद्यालय शिक्षा एवं शोध के क्षेत्र में एक अलग पहचान बनायी है, और आने वाले समय में यह दोनों संस्थानें मिलकर वानिकी के क्षेत्र में बुन्देलखण्ड में कृषकोपयोगी तकनीकियां विकसित कर कृषकों की आय में बढ़ोत्तरी करने का प्रयास करेंगी। वानिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा0 संजीव कुमार ने इस समझौते के लिये महत्वपूर्ण भूमिका निभायी हैं। डा0 संजीव कुमार ने बताया कि यह समझौता महाविद्यालय के शिक्षा, शोध, व प्रसार गतिविधियों में तेजी लाएगा। शोधार्थी छात्रों के लिये शोध के लिये नये आयाम विकसित होंगे जिसका फायदा इस क्षेत्र के कृषकों को वानिकी के क्षेत्र में नई तकनीकी के रूप में मिलेंगी। उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर के परिस्थितिकी एवं जलवायु परिवर्तन विभाग के विभागाध्यक्ष डा0 अविनाश जैन ने इस समझौतें को क्षेत्र के लिये आवश्यक और जरूरी कदम बताया। समझौता ज्ञापन के दौरान विश्वविद्यालय के निदेशक प्रसार डा0एन0 के0 बाजपेयी,अधिष्ठाता उद्यान, डा0 एस0वी00द्विवेदी, अधिष्ठाता कृषि, डा0जी0एस0 पंवार, एवं वित नियंत्रक डा0 अजीत सिंह उपस्थिति रहे। यह जानकारी जनसंपर्क अधिकारी बीके गुप्ता ने दी।

आज

कानपुर 14 दिसम्बर 2021 2

बहुउद्देशीय कृषिवानिकी वृक्ष प्रजातियों की नर्सरी एवं रोपण तकनीक पर छः दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ

कार्यक्रम में उपस्थित अतिथि व अन्य। छाया-आज

(आज समाचार सेवा)

झांसी, 13 दिसम्बर। रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्याल झांसी में कुलपति के निर्देशन में छह दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आज विधिवत् शुभारम्भ हुआ। बुंदेलखण्ड क्षेत्र में बहुउद्देशीय कृषि वानिकी वृक्ष प्रजातियों की नर्सरी एवं रोपण तकनीक पर राष्ट्रीय कृषि सम विकास योजना (रफ्तार) के अर्न्तगत शुरू किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. एम. जे. डोबिरियाल ने स्वागत संबोधन किया। इस प्रशिक्षण में ७० किसान, युवा एवं विद्यार्थी भाग ले रहे हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभागियों को बहुउद्देशीय वानिकी पौधों के साथ फल, फूल की नर्सरी की स्थापना एवं कुशल संचालन के बारे में प्रशिक्षण दिया जाएगा। डॉ. ए. के. पाण्डेय अधिष्ठाता उद्यानिकी एवं वानिकी ने बताया कि वर्ष २०३० तक देश को करीब १०० मिलियन घन मीटर इमारती तथा अन्य लकड़ियों की आवश्यकता होगी, जबकि अभी देश में मात्र ५७ मिलियन घन मीटर लकड़ी उपलब्ध है इस आवश्यकता को पूरा करने तथा आयात को कम करने के लिए कृषि में वृक्षों के समायोजन की आवश्यकता है। किसान युवा एवं विद्यार्थी इस प्रशिक्षण द्वारा विभिन्न वृक्षों की नर्सरी तकनीक पर प्रशिक्षण लेकर अपना व्यवसाय विकसित कर सकते हैं। इस प्रशिक्षण के अंतर्गत किसान विभिन्न कृषि वानिकी वृक्षों की प्रजाति जैसे नीम, मेलिया डुबिया, कदम, बांस, संरक्षित कृषि वानिकी, चारा आधारित कृषिवानिकी, उद्यानिकी वृक्षों के नर्सरी एवं रोपण तकनीक पर विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकेंगे साथ ही प्रतिदिन प्रक्षेत्र भ्रमण द्वारा विभिन्न तकनीकों के अनुप्रयोगों को बताया जाएगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ. एस. एस. सिंह, निदेशक, प्रसार शिक्षा ने बताया कि हमारी कृषि इंद्रधनुष की तरह सतरंगी हो अर्थात कृषि में दूध, फसल, तेल, मछली, चारा उत्पादन की तकनीक का समन्वय होना चाहिए। जिससे कि किसान आत्मनिर्भर बने। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि निदेशक, केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान, झांसी ए. अरुणाचलम ने बताया कि बहुउद्देशीय वानिकी वृक्षों को न केवल मेड़ पर लगाया जाना चाहिए, बल्कि सामूहिक रूप से गांव के खाली पड़ी भूमि या ऊसर भूमि पर भी वृक्षों को लगाकर फल, ऊर्जा एवं चारा प्राप्त किया जा सकता है और उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा हो रहे इस प्रशिक्षण की सराहना की। इस अवसर पर डॉ. गौरव शर्मा, डॉ. आर. पी. यादव, डॉ. पंकज लांवानिया, डॉ. पवन कुमार, डॉ. प्रियंका शर्मा, डॉ. दीपिका आयते, डॉ. विनोद कुमार, डॉ. ए. एस. काले, डॉ. आर. एस. तोमर एवं विभिन्न ग्रामों से आये हुए किसान और छात्र उपस्थिति रहे। संचालन डॉ. गरिमा गुप्ता ने एवं आभार समन्वयक डॉ. प्रभात तिवारी ने किया।